OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 8

कथा सरिता

साहसहीन सेना की हार

प्राचीनकाल की बात है। पहाड़ी प्रदेश में एक राजा राज्य करता था। चूंकि राज्य पहाड़ों से घिरा था, इसलिए कभी किसी ने वहाँ आक्रमण नहीं किया। राजा के सैनिक प्रशिक्षित तो थे, किन्तु लड़ाई में उन्होंने कभी हिस्सा नहीं लिया था। चूंकि ऐसा अवसर ही नहीं आया था, इसलिए राजा सहित सभी सैनिक निश्चिंत रहते थे, मगर एक बार किसी राज्य ने हिम्मत दिखाई और इस राज्य पर हमला कर दिया। वे लोग पूरी तैयारी के साथ आये थे। पहाड़ी प्रदेश का राजा भी वीर था। उसने अपने सैनिकों को बुलाकर युद्ध संबंधी निर्देश दिये। फिर पूर्वाभ्यास हेतु एक छद्म सेना (मिट्टी की) निर्मित की और अपने सैनिकों को आदेश दिया, 'आगे बढ़ो और वार करो। सैनिकों ने राजा को हौसला तो बहुत दिलाया था, किंतु राजा का आदेश पाने के बाद भी सैनिक अपने स्थान से एक इंच भी आगे नहीं बढ़े। बस, उन सभी ने अपनी-अपनी तलवार म्यान से निकालकर ऊपर उठाई और जोर से समवेत होकर चिल्लाए। राजा ने पूछा, क्या कर रहे हो? सैनिक बोले, राजन! आगे बढ़ने से पहले हम अपने दुश्मन को दिखाना चाहते हैं कि हम लोग तैयार हैं। तुम वापस चले जाओ। राजा तत्क्षण समझ गया कि उसके सैनिक शत्रु सेना से डरे हुए हैं और अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। चूंकि उन्होंने कभी युद्ध लड़ा ही नहीं, इसलिए वार करने की हिम्मत उनमें नहीं है। तब राजा ने उनसे कहा, तुम लोग तलवारें रख दो और लौट जाओ। हम यह युद्ध बिना लड़े ही हार चुके हैं, क्योंकि जीतने के लिए साहस अनिवार्य है। सच्ची वीरता कहने में नहीं, बल्कि दिखाने में अभिव्यक्त होती है और इसके लिए मानसिक दृढ़ता व आत्मविश्वास जरूरी है।

सर्वोत्तम दान

किसी शहर में एक मुफलिसी पसंद संत रहा करते थे। उपलब्धियां आला दर्जे की थीं। वे बच्चों के साथ ही खेलते और अपने हाथों से खूबसूरत खिलौने बनाकर देते। एक दोपहर वे पेड़ के साए में बैठे घास, फूल व पत्तों से एक छोटे बगीचे की प्रतिकृति बना रहे थे। गांव की एक महिला वहाँ से गुजरी। उस बेहद सुंदर बगीचे को देखकर उसने पूछा, आप यह क्या बना रहे हैं? संत ने कहा-मैं स्वर्ग का बाग बना रहा हूँ, क्या तुम इसे खरीदोगी? महिला संत को जानती थी इसलिए उसने इसकी कीमत पूछी। संत ने कहा इस स्वर्ग के बगीचे का मूल्य है, एक हजार रुपये। उस समय एक हजार रुपये बहुत बड़ी रकम होती थी लेकिन महिला ने संत को मदद करने के उद्देश्य से एक हजार रुपये देकर उस बगीचे को खरीद लिया। संत ने हजार रुपये का अनाज-कपड़े खरीदकर शहर के गरीब बेसहारा लोगों में बांट दिया। उस रात महिला को स्वप्न में खरीदा वह बगीचा दिखा जिसमें से उसे एक स्वर्ग के समान बगीचे में प्रवेश मिला। वहाँ रत्नों से जड़े महल, बाग व परम आनंद का वातावरण था। वहाँ महिला के पास एक देवदूत आया और उसने अपनी किताब में उस स्वर्ग के बाग को उसके नाम लिख दिया। दूसरे दिन से वह एक अनजान प्रसन्नता में रहने लगी। उसके पति ने उसकी खुशी का कारण पूछा। पत्नी ने सारी बात बता दी। उसका पति संत के पास गया और बगीचा खरीदने की इच्छा जताई। संत ने कहा-मित्र, तुम्हारी पत्नी ने बगीचा बिना किसी प्रत्युपकार की आशा के खरीदा और उसे वह मिला। तुम प्रतिफल की आशा से वह खरीदने आये हो इसलिए तुम्हें वह प्राप्त न हो सकेगा। बिना प्रतिफल की आशा से किया गया दान ही सच्ची कृपा का कारक बनता है। वह आशाओं से परे फल देता है। जो व्यक्ति किसी आशा से दान करता है उसका भाव व्यापार का होता है और वह निष्फल ही होता है।

सुख का राज़

रमण महर्षि के एक भक्त के युवा बेटे का निधन हो गया। वह बहुत दुखी होकर उनके पास आया और कुछ प्रश्न पूछे जिनसे उनका दुख प्रकट हो रहा था। महर्षि ने उससे कहा, 'खुद से पूछो कि कौन दुखी हो रहा है।' हालांकि, इससे उनका समाधान नहीं हुआ। फिर महर्षि ने कहा, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। राम और कृष्ण नाम के दो युवकों ने अपने-अपने माता-पिता से कहा कि वे विदेश जाकर बहुत-सा पैसा कमाना चाहते हैं। दोनों के पालकों ने अनुमति दे दी। हालांकि, विदेश पहुँचते ही कृष्ण को कोई बीमारी हो गई और कुछ ही दिनों में उसकी मौत हो गई। राम ने व्यवसाय किया और वह अच्छा-खासा कमाने लगा। सोचने लगा काफी पैसा हो जायेगा तो स्वदेश लौटकर माता-पिता की सेवा करूँगा। एक दिन उसकी मुलाकात अपने गाँव के व्यक्ति से हुई। वह घर जा रहा था। उसने कहा, 'कृष्ण के माता-पिता को उसकी मौत का समाचार दे देना और मेरे माता-पिता से कहना कि मैं खुश हूँ और जल्दी ही लौट आऊंगा।' उस व्यक्ति ने समाचार तो पहुँचा दिया पर कृष्ण के माता-पिता को राम का समाचार दे दिया और राम के पालकों को कृष्ण का। अब राम के माता-पिता अपने पुत्र के निधन के शोक में डूब गए जबकि कृष्ण के पालक खुश हो गए कि उनका बेटा लौटने वाला है। दोनो परिवारों ने अपने बेटों को देखा नहीं था पर वे उन्हें मिली खबर के अनुसार दुखी व खुश थे। महर्षि ने कहा, 'हमारी भी स्थिति ऐसी है। हम मन की कही ढ़ेर सारी बातों पर भरोसा कर, जो नहीं है उसके होने और जो है उसके न होने का विश्वास कर लेते हैं। यदि हम मन पर भरोसा करने की बजाय हृदय में जायें और वहाँ बैठे ईश्वर का साक्षात्कार कर लें तो हमारे दुखी होने का कोई कारण ही नहीं रहेगा।'

धैर्यवान की जीत

जापान में एक राजा रहता था। उसे चीनी मिट्टी के फूलदान इकट्ठा करने का बड़ा शौक था। उसके खजाने में देश-विदेश से लाए गए बेशकीमती फूलदानों का संग्रह था। फूलदानों की देखरेख के लिए उसने 20 कर्मचारियों को लगा रखा था, जो प्रतिदिन उन बेहतरीन कलाकृतियों की साफ-सफाई करते। एक दिन सफाई के दौरान एक कर्मचारी के हाथ से एक फूलदान टूट गया। सब लोग घबरा गए और बात राजा तक पहुँची। क्रोध में आगबबूला राजा दौड़ता हुआ उस कक्ष तक आया और उसने फूलदान तोड़ने वाले कर्मचारी को पेश करने को कहा। बूढ़ा सेवक कांपते हुए उपस्थित हुआ और माफी मांगने लगा। राजा का गुस्सा सांतवें आसमान पर था। उसने उस सेवक की बात पूरी सुने बगैर ही मौत की सजा सुना दी। वह बोला-इस कठोर दंड से अन्य सेवक अपने काम के प्रति और अधिक गंभीर रहेंगे। बूढ़े सेवक ने सारी बात सुनी और कोई कुछ समझ पाये इससे पहले तड़ातड़ बचे 19 फूलदान भी तोड़ दिये। राजा, मंत्री और दरबारी देखते रह गए। सैनिकों ने उसे धर दबोचा। गुस्से और आश्चर्य से राजा ने पूछा-तुमने यह क्यों किया? बूढ़े सेवक ने जवाब दिया-मेरा मरना तो तय है लेकिन बाकी के फूलदानों को तोड़कर मैंने 19 लोगों की जान बचाई है। राजा ने बूढ़े के साहस व समझ की प्रशंसा की और उसे छोड़ दिया। कार्य के दौरान गलती होना स्वाभाविक है और यही कारण है कि अत्यधिक चिंतित होना गलतियों को आमंत्रण देना है। ऐसे समय में जबकि हम किसी कारणवश भारी मुसीबत में हों, तो धैर्य न खोकर बुद्धिमता से उसका मुकाबला करना ही सही नीति है। बुद्धिमान और धैर्यवान व्यक्ति ही जीवन में सदैव विजय प्राप्त करता है।

भूल हो जाने पर ... पेज 2 का शेष...

ऐसी भीड़ या लोगों का आना जाना भी नहीं होता है जो कुत्ता किसी को नुकसान पहुँचाये!''

''आपका कहना सही है, मुझे कुत्ता खुला रखने का प्रलोभन था लेकिन कायदे की दृष्टि से गलत ही है ना!''

''हाँ, लेकिन यह छोटा सा कुत्ता किसी को क्या नुकसान करने वाला था'' – पुलिस ने कहा।

''हाँ, परंतु वो कभी किसी गिलहरी को भी मार सकता है'' मैंने कहा।

''देखो, मुझे लगता है कि आप इस बात को गम्भीरता से लेकर बैठे हो। आपको एक रास्ता बताता हूँ, आप मुख्य रास्ते को बदल कर अंदर के भाग में कुत्ते को लेकर घूमें, जिससे कुत्ते पर मेरी नज़र न पड़े। बस, हम यह बात भूल जाते हैं'' – पुलिस ने कहा। पुलिसमैन के अहम् की भूख पूर्ण हुई और वह शांत हुआ।

भूल हो जाने पर यह पाँच बातें याद रखनी चाहिए :–1. अपनी भूल को नम्रता और सहृदयता से स्वीकार करें।

2. भूल बताने वालों को उपेक्षित किये बिना ही उसे सम्मानपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिये।

3. हम अगर झूठे हैं तो व्यर्थ दलीलबाज़ी में उतरकर बचने की कोशिश करने के बदले बिगड़ी बाज़ी को सुधारने की कोशिश करें।

4. एक कहावत है कि ''लड़ने से आप उचित परिणाम ला नहीं सकते, लेकिन समझदारीपूर्वक हार स्वीकार कर लेने से अपने मुताबिक फल प्राप्त हो जाता है।

5. यदि आप गलत हो तो उत्साहपूर्वक भूल को स्वीकार कर नम्रतापूर्ण मीठे शब्दों से सामने से ही व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर हार को जीत में बदल सकते हैं।

ऋषिकेश। सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी जगदीशानन्द जी। साथ हैं संत धर्मानन्द महाराज तथा ब्र.कु.आरती।

कुचामन-नागौर। मॉर्निंग न्यूज़ फेस्टीवल में ज्ञान-प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए नेशनल अवार्डेड फोटोग्राफर, ई.टी.वी. रिपोर्टर मुरारीलाल, ब्र.कु.अनीता तथा अन्य।

घणसोली। धार्मिक सभा का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीला, कर्नाटका मल्ला पेपर के एडिटर चंद्रशेखर, रमेश पुजारी, अन्नी शेटटी, सुरेश शेटटी तथा अन्य।

अलकापुरी-बड़ौदा। ''नींद की समस्या का समाधान'' विषय पर आयोजित सेमिनार का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जी.एच.आर.सी. के जीयियॉट्रीशियन डॉ.महेश हेमाद्री, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.नरेन्द्र पटेल, अनील बठीजा तथा अन्य।

दिल्ली-आर.के.पुरम। ए.के.वर्मा,डी.जी.,सी.पी.डब्ल्यु.डी. को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनीता एवं ब्र.कु.मनिषा।

इन्दौर-उषानगर। भाजपा युवा नेता एवं पार्षद सुधिर देड़गे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.ललिता।